सूफी काव्य और जायसी

डॉ. कृष्ण कुमार पासवान
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
राम चरित्र सिंह महाविद्यालय
मंझौल, बेगुसराय
सम्पर्क : ksoni.hindi@gmail.com

हिंदी साहित्य के मध्यकाल के आरंभ से पूर्व ही एक ऐसी काव्य परंपरा का प्रवर्तन हो चूका था जिसे विभिन्न विद्वानों ने अनेक नामों से पुकारा है, जैसे- प्रेममार्गी (सूफी) शाखा, प्रेम-काव्य, प्रेमकथानक-काव्य, प्रेमाख्यान-काव्य, सूफी काव्य आदि| इन नामों से यह पता चलता है कि इस काव्य परंपरा में प्रेम तत्व की प्रधानता है, किन्तु इनका प्रेम-तत्व परंपरागत भारतीय श्रृंगार भावना से थोड़ा भिन्न है| सामान्य श्रृंगार विषयक काव्यों में विवाह, दाम्पत्य एवं सामाजिक जीवन की मर्यादाओं को स्वीकार करके चलने वाले पारिवारिक प्रेम का चित्रण किया जाता रहा है| लेकिन सूफी काव्य में प्रेम में शुद्ध स्वछान्दतापूर्ण दृष्टिकोण, सौन्दर्य भावना, साहसपूर्ण क्रिया-कलाप एवं समाज-विमुख प्रणय-भावना का चित्रण हुआ है| इसलिए सूफी काव्य के इस विशिष्टता को प्रारंभ में फारसी प्रभाव या सूफी प्रभाव की देन कहते हुए अभारतीय कहा गया| लेकिन आगे चलकर जब हिंदी में अनेक शोध हुए तो यह माना गया कि स्वच्छंदता, सौन्दर्य, सहस, कल्पना आदि से मिश्रित प्रणय-भावना किसी भाषा-विशेष, देश-विशेष या संप्रदाय विशेष की विशेषता न होकर एक ऐसी सवाजनिक प्रवृति है जो हर भाषा और हर देश के साहित्य में समय-समय पर अभिव्यक्त होती रही है| इस प्रवृति को विश्व-साहित्य में 'रोमांस' अर्थात स्वच्छंद प्रेम कहा जाता है| जब कोई भी समाज परम्पराओं, रुढियों और मर्यादाओं से अत्यधिक जकड़ जाता है तो उसकी प्रतिक्रिया के परिणाम-स्वरूप स्वच्छंदता या उन्मुक्तता का आना स्वाभाविक है| इसी के परिणाम स्वरुप विभिन्न भाषाओं के साहित्य में स्वच्छंद प्रेम की प्रवृतियों का चित्रण होता रहा है| देश, काल और परिस्थिति में भेद के कारण इसके विषय-वास्तु एवं शैली में थोड़ा-बहुत अंतर देखने को मिलता है| हिंदी के मध्यकालीन प्रेमाख्यानक साहित्य को भी विश्व के इसी रोमांस साहित्य की एक धरा या एक शाखा के रूप में देखना चाहिए|

सूफी काव्यधारा में इन कवियों ने प्रेम को साधना का मार्ग बताया है| इस धारा के साधक परमात्मा को पत्नी एवं आत्मा को पति के रूप में स्वीकारते हैं| ये ईश्वर के साथ भय का नहीं बल्कि प्रेम का का सम्बन्ध स्थापित करते हैं| इश्क़मजाजी से इश्क़हकिकी की यात्रा में विश्वास रखते हैं| इनके यहाँ प्रेम तत्व सर्वोपरी है| सूफी कवियों ने अपनी भक्ति सम्बन्धी भावनाओं को भारतीय समाज में प्रचलित प्रेमाख्यानों द्वारा अभिव्यक्त किया है|

हिंदी साहित्य में सूफी काव्यधारा का समय लगभग चौदहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी के मध्य माना गया है| इस परंपरा की शुरुआत सन् 1379 ई. में मुल्ला दाउद के 'चंदायन' से होती है| इस धारा के प्रमुख कवि मालिक मोहम्मद जायसी हैं| जायसी के अतिरिक्त और भी अनेक सूफी कवि हुए हैं जिसमें कुतावान-('मृगावती'), मंझन-('मधुमालती'), उस्मान-('चित्रावली'), कासिम शाह- ('हंस जवाहिर') आदि महत्वपूर्ण रचनाकार हैं|

मालिक मुहम्मद जायसी

मालिक मोहम्मद जायसी के जन्म और मृत्यु का कोई प्रमाणिक साक्ष्य नहीं मिलाता है| माना जाता है कि ये प्रसिद्ध सूफी फकीर शेख मोहिदी (मुहीउद्दीन) के शिष्य थे और जायस में रहते थे| ये एक आंख से अंधे और एक कान से बहरे थे| देखने में भी कुरूप थे| कहते हैं कि शेरशाह इनके रूप को देख कर हँसा था जिसपर इन्होंने कहा था- "मोहिका हँसेसि कि कोहरहि|" इनके नाम से कई काव्य प्रचलित हैं परन्तु *'पद्मावत', 'अखरावट' और 'आखरी कलाम'* ये तीनों इनके प्रमाणिक रचनाएँ हैं| हिंदी साहित्य में ये 'पद्मावत' के लेखक के रूप में विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं| पद्मावत में राजा रत्नसेन, पद्मावती और नागमती के बीच का प्रेमसंबंध और मध्यकालीन राजनीतिक परिस्थितियों का वर्णन किया गया है| इसमें जहाँ एक ओर नागमती और रत्नसेन के दांपत्य जीवन को मार्मिकता के साथ दर्शाया गया है वहीं दूसरी तरफ विवाहित राजा रत्नसेन का तोते के द्वारा पद्मावती के रूप सौन्दर्य के वर्णन को सुनकर उसको पाने की इच्छा को अत्यंत को सजीवता से चित्रित किया गया है| इस महाकाव्य में रत्नसेन जीवात्मा और पद्मावती ब्रह्मात्म के रूप में चित्रित हुआ है| नागमती को दुनिया-धंधा बताया गया है जिसे हम संसारिकता भी कह सकते हैं| अखरावट में वर्णमाला के एक-एक अक्षर को लेकर सिद्धांत सम्बन्धी तत्वों से भरी चौपाईयाँ कही गई हैं| आखरी कलाम में क़यामत का

वर्णन है| जायसी की प्रमुख रचना पद्मावत है जिसे पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि जायसी का ह्रदय कितना कोमल और प्रेम की पीर से भरा हुआ था| लोक और अध्यात्म दोनों पक्षों में उनकी गूढ़ता, गंभीरता और सरसता दिखाई पड़ती है|

जायसी के पद-मानसरोदक-खण्ड

1. एक दिवस पून्यो तिथि आई| मानसरोदक चली नहाई||

पदमावति सब साखी बुलाई| जनु फुलवारि सबै चलि आई||

कोई चंपा कोई कुंद सहेली| कोई सु केत करना रस बेली||

कोई सु गुलाल सुदरसन राती| कोई सो बकावारि-बकुचन भाँती||

कोई सो मौलसिरि पुहपावती| कोई जाही जूही सेवती||

कोई सोनजरद, कोई केसर| कोई सिंगार-हार नागेसर||

कोई कुजा सदबर्ग चमेली| कोई कदम सुरस रस-बेली||

चली सबै मालती संग, फूलीं कँवल कुमोद|

बेधि रहे गन गंधरब, बास-परमदामोद||60||

2. खेलत मानसरोवर गईं | जाइ पाल पर ठाढ़ी भईं||

देखि सरोवर हँसै कुलेली| पदमावति सौं कहहिं सहेली||

ए रानी! मन देखु बिचारी| एहि नैहर रहना दिन चारी||

जौ लगि अहै पिता कर राजू| खेलि लेहु जो खेलहु आजू||

पुनि सासुर हम गवनब काली| कित हम, कित यह सरवर-पाली||

कित आवन पुनि अपने हाथा| कित मिलि के खेलब एक साथा||

सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेहीं| दारुन ससुर न निसरै देहीं||

पिऊ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह|

दहुँ सुख राखै कि दुख, दहुँ कस जनम निबाह||61||

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, जायसी ग्रंथावली
2. विजयदेवनारायण साही, जायसी
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, त्रिवेणी
4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास
5. डॉ. नागेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास

(समाप्त)